फौज के बल से देश नहीं टिकेगा। आपका उस चीन से मुकाबला होगा, जहाँ अनाज की कमी नहीं है। चीनवाले तो दूसरे देशों को अनाज भेजते हैं। ऐसे देश से मुकाबला करने की बात करते हो और यह कहते हो कि हम पंडित नेहरू के पीछे हैं तो कैसे चलेगा? उनसे आगे जाओ। गाँव-गाँव का इन्तजाम करो, तभी देश सुरक्षित रह सकेगा।

लोग हमसे पूछते हैं कि बाबा, आप भूदान-ग्रामदान और शांति-सेना की बात करते हैं तो लड़ाई की हालत में आपके काम का क्या होगा? मैं जवाब देता हूँ कि लड़ाई छिड़ जाय तो आपकी पंचवर्षीय योजना 'हाऊस ऑफ कार्डस्' की भाँति गिर जायगी और ग्रामदान का कार्यक्रम जोरों से चलेगा। येलवाल में सब पक्षों के नेताओं के सामने मैंने कहा था कि भूदान-ग्रामदान को हम 'डिफेन्स मेजर' कहते हैं। यह 'सेकंड लाइन ऑफ डिफेन्स' है या 'फर्स्ट लाइन ऑफ डिफेन्स' है, आप ही तय कीजिये। लेकिन समझना चाहिए कि देश में अंदरूनी ताकत रही तो फौज लड़ सकेगी। अंदर सब पोल हो तो पोल-ढोल बजानेवालों से लड़ा नहीं जायगा। इसलिए यह होना चाहिए कि ठोस योजना के साथ-साथ आपकी फौज काम कर रही है, सबका दिल एक है। हमने गाँव-गाँव की योजना करके गाँवों को बचा लिया है।

घूमने का प्रयोजन

लोग मुझसे पूछते हैं कि बाबा, आप इस तरह गाँव-गाँव क्यों घूमते हो? क्या आप थकते नहीं? मैं जवाब देता हूँ कि इस बुढापे में मेरे लिए थकना आसान था, लेकिन मैं नहीं थकता हूँ, क्योंकि मैं अपनी आँखों के सामने देश का नाश देख रहा हूँ। मैं देख रहा हूँ कि हम एक-दूसरे को मदद नहीं करेंगे, मजदूरों को, गरीबों को अपने परिवार में शामिल नहीं करेंगे तो हिंदुस्तान की आजादी का नाश होगा। जो अंधा होता है, वह खंभे से टकराता है। आँखवाला खंभे को देखता है, इसलिए उसे टालकर आगे बढ़ता है। परमात्मा की कृपा से मैं आँखवाला हूँ। मैं देख रहा हूँ कि आगे क्या होनेवाला है। इसलिए आपको आगाह करने के लिए एक भी दिन की फुर्सत लिये बिना मैं घूम रहा हूँ। मैं अपनी दुबली आवाज आपके कानों तक पहुँचा रहा हूँ। आगे क्या होगा, यह तो ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है। मैंने अपना फर्ज अदा किया। इससे ज्यादा मैं क्या कर सकता हूँ?

इलेक्शन के परिणाम

मैं किसी पार्टी का नहीं हूँ। न मैं आगे कोई पार्टी बनानेवाला ही हूँ। मैं तो पार्टियों में विश्वास ही नहीं करता। मैं मानता हूँ कि पश्चिम से हमने जो जम्हूरियत का तरीका लिया, उसमें फर्क करना जरूरी है। जम्हूरियत का तरीका सबसे बेहतरीन है, लेकिन हमने इंग्लैंड से वह तरीका जैसा का तैसा लिया। हमने सोचा भी नहीं कि इंग्लैंड और भारत की हालत में कितना फर्क है। इंग्लैंड में एक ही जबान है, यहाँ चौदह जबानें हैं। इंग्लैंड में एक ही मजहब है, यहाँ कई मजहब और उसमें भी कई पंथ हैं। इंग्लैंड में जातिभेद नहीं है, यहाँ इतनी जातियाँ हैं कि जैसे पेड़ की पत्तियाँ। इंग्लैंड में विज्ञान काफी विकसित हुआ है, हिंदुस्तान उसमें बहुत पिछड़ा हुआ है। इंग्लैंड में दुनियाभर की संपत्ति इकट्ठा हुई है, हिन्दुस्तान पिछले दो सौ साल से चूसा गया है। यहाँपर मुश्किल से फी आदमी पौन एकड़ जमीन है, जिसपर हमारा सारा दारोमदार है। इंग्लैंड में पार्लमेंटरी डेमोक्रेसी चार सौ साल से विकसित होती आयी है। यहाँ हमने बारह साल पहले वहाँसे लाया हुआ पौधा, जैसा का तैसा लगाया है। इसका नतीजा क्या हुआ? राजा राममोहनराय से लेकर गांधीजी तक सबने जिस जातिभेद पर प्रहार किया और जो जातिभेद मरने की तैयारी में था, उसे इस इलेक्शन ने जिलाया। इसलिए समझना चाहिए कि हमने पश्चिम से जो तरीका लिया है, उसमें यहाँकी अबोहवा के मुताबिक फर्क करना जरूरी है।

आज देश में जगह-जगह असंतोष है, कशमकश चल रही है। इस हालत में हमारी ही सभाओं में लोग शांति से सुनते हैं। जैसे तपी जमीन बारिश का पानी चूस लेती है, वैसे ही लोगों के दिल बारह साल से तपे हुए हैं। उन्हें इस विचार से ठंडक पहुँचती है। लोग कहते हैं कि यह विचार तो अच्छा है, लेकिन यह व्यवहार में कैसे आयेगा? मैं तो आज यहाँ हूँ और कल यहाँसे जाऊँगा। मैंने अपना विचार सुना दिया। अब भगवान आपको जैसा सुनायेगा, वैसा आप करेंगे। करना या न करना आपकी मर्जी की बात है। जो करना है, करो और उसका परिणाम भुगतो। हम तो मजे में घूमेंगे। हमें इसकी कोई पर्वाह नहीं कि लोगों ने हमारी बात मानी या नहीं मानी। हम तो बेपर्वाह होकर घूमते हैं। स्वामी रामतीर्थ कहा करते थे कि दुनिया में जो अच्छाई चल रही है, वह सब मुझमें चल रही है और जो बुराई चल रही है, वह सब मुझमें चल रही है, वैसा ही मुझे भी लगता है। "चलती है ट्रेनें फर फर मुझमें मुझमें मुझमें। घूमते हैं योगी दर दर मुझमें मुझमें मुझमें। लड़ते हैं वीर मर मर मुझमें मुझमें मुझमें।" तुमको लड़ना है तो लड़ो, मरना है तो मरो। हम समझते हैं कि यह सब हमारे विशाल हृदय में ही चल रहा है। यह सब भगवान की लीला है। हमें उसका कोई सुख-दुःख नहीं है। हमें इसी की खुशी है कि हमने अपना फर्ज अदा किया। अगर आप इस विचार के मुताबिक काम करते हैं तो आप देखेंगे कि हमारे देश के लिए कोई खतरा नहीं है।

●●●

अनुक्रम

१. तालीम के तीन आवश्यक विषय
हीरानगर १७ सितम्बर '५९ पृष्ठ,, ७९५
२. राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए केवल सेना से काम नहीं चलेगा
फिरोजपुर १९ नवंबर '५९ ,, ७९६

●

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन: १३९१ तार: 'सर्व-सेवा' वाराणसी।
www.vinoba.in